# NCERT SOLUTIONS

## CLASS - 9th

aglasem.com

Class : 9th
Subject : हिंदी
Chapter : 3
Chapter Name : उपभोक्तावाद की संस्कृति

Q1 लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

Answer. लेखक के अनुसार जीवन में सुख का मतलब सिर्फ़ विलासिता की वस्तुओं से रह गया है। आज हम भौतिकवाद और दुनियावी दिखावे को सुख की श्रेणी में रख देते हैं। नित्य-नए उत्पादों का उपयोग करके हम स्वयं को उनका आदि बनाते चले जाते हैं। हम इन उत्पादों पर इतने निर्भर हो जाते हैं कि इनके बिना हमें अपना जीवन अधूरा महसूस होता है।जब तक हम इन भौतिक वस्तुओं का उपयोग नहीं कर लेते हैं, हमें लगता है कि हमें तो सुख ही नहीं मिल रहा। कुल मिलाकर प्रस्तुत लेख में सुख का तात्पर्य भौतिकवाद से रखा गया है।

Page : 38 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q2 आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

Answer. आज उपभोक्तावादी संस्कृति से हमारी मूल संस्कृति और नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति से इतने ज़्यादा प्रभावित हो रहे हैं कि हम उसको अपनाने के लिए लालायित हो रहे हैं। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि हमें अपनी संस्कृति अपनाने से भी शर्म महसूस होने लगी है। जब हम किसी नए उत्पाद का विज्ञापन देखते हैं तो हम उसे ख़रीदने के लिए उतावले हो जाते हैं। ये उतावलापन इसलिए नहीं होता कि हमें उस वस्तु की आवश्यकता है बल्कि हमें तो समाज में अपने रुतबे का बखान करना होता है। हमारी संस्कृति किसी भी बनावटी दिखावे से बिलकुल दूर है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम अपने ही चरित्र का भी पतन करते जा रहे हैं।

aglasem.com

Page : 38 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q3 लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

Answer. लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती कहा है क्योंकि उपभोक्तावाद के कारण हमारी अपनी संस्कृति और उसके मूल्यों का तेज़ी से हनन हो रहा है। उपभोक्ता संस्कृति के पीछे हम इस क़दर अंधे हो रहे हैं कि हमें अपने मूल्यों को अपनाने में शर्म महसूस हो रही है। उपभोक्ता संस्कृति उपभोग की वस्तुओं का विज्ञापन करके हमें भ्रमित करती है। हम इन उपभोग और विलासिता की वस्तुओं को ही अपने सुख का माध्यम समझने लगते हैं। इन चीज़ों का उपयोग करके हम दिखावापरस्ती करते हैं और अपने चरित्र को पतन की राह पर ले चलते हैं।

Page : 38 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q4 आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।
(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

Answer.

(क) विज्ञापनों को देखकर हम किसी भी वस्तु को ख़रीद लेते हैं और ये नहीं देखते कि वह कैसी है। हम सिर्फ़ उस वस्तु को इसलिए ख़रीदते हैं ताकि हम भी आधुनिक लोगों की श्रेणी में आ सकें और अपने रुतबे का बखान कर सकें। हम अपने नीति मूल्यों को तेज़ी से भूलते चले जाते हैं और ख़ुद को इन उत्पादों का गुलाम बना देते हैं। इससे हमारा चरित्र भी नष्ट होने लगता है और हम उपभोग संस्कृति की एक कठपुतली मात्र बन कर रह जाते हैं।

(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों अर्थात् आज वे चीज़ें भी प्रतिष्ठित मानी जाने लगी हैं जो पहले के समाज में अजीब की श्रेणी में रखी जाती थीं। इसका उदाहरण हम इस प्रकार ले सकते हैं कि आज फटे कपड़े पहनना मॉर्डन और उच्च क्लास की श्रेणी में आता है। इसी प्रकार आज किसी बड़े होटल में अधपका खाना ऑर्डर करना आधुनिकता की श्रेणी में आता है। ये एक प्रकार की झूठी प्रतिष्ठा है जो हास्यास्पद है लेकिन हैं तो प्रतिष्ठा ही।

Page : 39 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q5 कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम उसे ख़रीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं? क्यों?

Answer. टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम किसी भी उत्पाद को ख़रीदने के लिए लालायित हो जाते हैं भले ही वह वस्तु हमारे लिए उपयोगी न हो। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम आज उपभोक्ता संस्कृति के पीछे पागल से हो गए हैं।हमें लगता है कि इन उत्पादों का प्रयोग करके हम भी प्रतिष्ठित की श्रेणी में आ जाएँगे और समाज में हमारा रुतबा ऊँचा हो जाएगा।विज्ञापनों में दिखाए गए लोग चीज़ों का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि अमुक उत्पाद का प्रयोग करके वे सफलता को प्राप्त हुए। इन चीज़ों को देखकर हमें उन उत्पादों के प्रति लालच उत्पन्न होता है। इस प्रकार हम उस चीज़ को ख़रीदने के लिए लालायित हो जाते हैं ये जानते हुए भी कि वह हमारे काम की नहीं है।

Page : 39 , Block Name : रचना और अभिव्यक्ति

Q6 आप के अनुसार वस्तुओं को ख़रीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

aglasem.com

Answer. किसी भी वस्तु को ख़रीदने का आधार उसकी गुणवत्ता ही होनी चाहिए ना कि उसका विज्ञापन। ऐसा इसलिए क्योंकि यदि वस्तुओं की गुणवत्ता अच्छी नहीं होगी तो फिर वह हमारे किसी काम के नहीं रहेगें फिर चाहे उसके विज्ञापन पर लाखों रुपये ही क्यों ना ख़र्च किये गये हों। उदाहरण के तौर पर यदि हम किसी कपड़े का विज्ञापन देखकर उसे ख़रीदते हैं और हम ये ध्यान नहीं देते कि उसकी गुणवत्ता कैसी है तो ये घाटे का सौदा हो सकता है। ऐसा इसलिए कि अगर उस कपड़े की गुणवत्ता अच्छी नहीं होगी तो वह जल्दी घिस जाएगा फिर चाहे वह कितना महँगा ही क्यों न हो। इस प्रकार किसी भी चीज़ को ख़रीदने से पहले हमें ये देखना चाहिए कि वह हमारे लिए कितना उपयोगी हो सकता है अर्थात् उसकी गुणवत्ता कैसी है।

Page : 39 , Block Name : रचना और अभिव्यक्ति

Q7 पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

Answer. आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' ने लोगों को वास्तव में अपना गुलाम बना रखा है। आज उत्पादों का विज्ञापन करके उन्हें लोगों के बीच आम कर दिया जाता है। लोगों को उत्पादों के प्रति आकर्षित करने के लिए तरह तरह की कहानियाँ बतायी जाती है और लोग उनसे प्रभावित भी हो जाते हैं। उन चीज़ों को ख़रीद कर लोग ख़ुद को आधुनिक की श्रेणी में रखते हैं। सिर्फ़ इतना ही नहीं है बल्कि जो लोग उन उत्पादों का प्रयोग नहीं कर रहे होते हैं वे उन्हें पिछड़ा और पुराने ख़याल का मानते हैं।यह एक प्रकार का दिखावा ही है। उपभोक्तावादी युग में पनप रही पाश्चात्य संस्कृति और दिखावे की संस्कृति के कारण हमारे नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है जिससे कि हमारा चरित्र पतन की ओर अग्रसर है।

aglasem.com

Page : 39 , Block Name : रचना और अभिव्यक्ति

Q8 आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाज़ों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

Answer. आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाज़ों और त्योहारों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। आज हम अपने त्योहारों को उनके मूल रूप और संस्कृति के आधार पर न मनाकर उन में पाश्चात्य का तड़का लगाते हैं। रीति-रिवाज़ों की बात करें तो उपभोक्ता संस्कृति के कारण हमारे नैतिक मूल्यों का पतन हो गया है जिस कारण आज हम अपने बड़ों के आदर वाली संस्कृति को तेज़ी से भुलाते जा रहे हैं। आज रिश्तों में दरार पड़ रही है क्योंकि विज्ञापन के माध्यम से लोगों को यह संदेश तेज़ी से दिया जा रहा है कि स्वयं का ध्यान रखना ही आवश्यक है भले ही दूसरे को कितना ही कष्ट क्यों न हो जाए।स्वार्थ आज अपने चरम पर पहुँच रहा है।

Page : 39 , Block Name : रचना और अभिव्यक्ति

Q9 धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।

इस वाक्य में ‘बदल रहा है’ क्रिया है। ये क्रिया कैसे हो रही है धीरे-धीरे। अतः यहाँ धीरे-धीरे क्रिया-विशेषण है।जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।जहाँ वाक्य में हमें पता चलता है क्रिया कैसे, कितनी और कहाँ हो रही है, वहाँ वह शब्द क्रिया-विशेषण कहलाता है।

(क) ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।

(ख) धीरे धीरे, ज़ोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, कम, ज़्यादा, यहाँ, उधर, बाहर-इन क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

Answer.

(क)

1. अमेरिका में जो आज हो रहा है, वो कल हमारे भारत ने भी आ सकता है।
2. आपको लुभाने की जी-तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती है।
3. हमारे सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है।
4. धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।
5. सामंती संस्कृति के तत्व भारत में पहले भी रहे हैं।

(ख)

1. धीरे-धीरे- धीरे धीरे वर्षा की शुरुआत हुई और फिर यह घनघोर हो गई।
2. ज़ोर से- जाते हुए पंकज ने ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर दिया।
3. लगातार- शिक्षक से लगातार एक ही प्रश्न पूछते रहने के कारण श्याम को लज्जा महसूस होने लगी।
4. हमेशा- हमें हमेशा सत्य की राह पर चलना चाहिए।
5. आजकल- आजकल युवाओं में तनाव तेज़ी से बढ़ता जा रहा है।
6. कम- कम भोजन करने से हम स्वस्थ जीवन का आनंद ले सकते हैं।
7. ज़्यादा- ज़्यादा बोलने से लोग हमें मूर्ख की श्रेणी में रखने लगते हैं।
8. यहाँ- हमारे यहाँ अतिथि का स्वागत उल्लास के साथ किया जाता है।
9. उधर- जब मैंने खिड़की के उधर झांक कर देखा तो मुझे हरे पेड़ नज़र आए।
10. बाहर- घर से बाहर जाते हुए मुझे रोना आ गया।

Page : 39 , Block Name : भाषा-अध्ययन

aglasem.com